धरती धन न आपना की ज्ञानो: एक आत्मनिर्भर स्त्री

डॉ. भोरे रवींद्र लिंबाजीराव
हिन्दी विभाग,
बद्रीनारायण बारवाले महाविद्यालय,
जालना (महाराष्ट्र)

भारतीय पुरूष प्रधान समाज में नारी की स्थिती मुख्य रूप से दो धाराओं पर दिखायी देती है। हमारी संस्कृति में नारी की महत्ता को स्वीकारा गया है। उसे सम्मानित एवं गौरान्वित करने का कार्य किया है - किंतु इसी निगाह से अगर हम समाज जीवन में उसकी दशा को देखने - समझने का प्रयास करें तो तथ्य कुछ अलग ही दिखायी देता है। एक ओर उसे पूजनीय माना जाता है - तो दुसरी ओर उसे गुलामी , दासी बनना पडता है। ' भारतीय समाज से अगर स्त्रीयोंकी गुलामी को नष्ट करना हैं तो उनके गुलामी का समाजशास्त्रीय विश्लेषण होना जरूरी है। ' (पृ. 1)

' स्त्री विमर्श' समकालीन साहित्ये का एक बहुचर्चित विमर्श रहा है। दलित , अल्पसंख्यांक, आदिवासी आदि उपेक्षित वर्गों की तरह स्त्री भी साहित्य में अपने ' स्वत्त्व ' के साथ उपस्थित होने लगी है। यद्यपी ' स्त्री ' आदिकाल से ही साहित्य के केंन्द्र में रही है , हर काल में , हर रचना में वह विद्यमान रही है। ' (पृ. 2)

आँचलीक उपन्यासों में भी स्त्री के विविध रूपो को देखा जा सकता है। कहीं वह गुलाम, पुरूष प्रधान संसकृति के अधीन, परावलंबिता, अपनेही विचारों मे मग्न तो कहीं कहीं अपड अज्ञानी होने के बावजूद भी आत्मनिर्भर स्त्री के रूप में उभरकर आयी है।

आत्मनिर्भर स्त्री ज्ञानो :-

ज्ञानो उपन्यास में प्रमुख स्त्री पात्र के रूप में उभरकर आयी है। वह निम्न वर्ग तथा चमार जातिकी प्रतिनिधी स्त्री पात्र है। ज्ञानो का चरित्र निडर स्त्री, साहसी प्रेमिका और आदर्श नायिका के रूप में चित्रित हुआ है। उपन्यास में जितना महत्त्व काली को है उससे कहीं ज्यादा ज्ञानो का है। जैसे ज्ञानो के संबंध में आई घटनाएँ ही उपन्यास के केन्द्र बिंदु को अवगत करा देती है।

ज्ञानो वह प्रतिनिधी नारी है जिसमें काली की प्रेमिका की भूमिका तो है किंतु उसमें शोषित स्त्री का अस्तित्त्व भी दिखाई देता है। ज्ञानो मंगू चमार की बहन और जस्सो की बेटी है। ज्ञानो और मंगू के विचारों में काफी अंतर पाया जाता है। मंगू हरनाम चौधरी की गुलामी करता है। ज्ञानो उसका विरोध करती है। उपन्यास में वह विद्रोहिणी के रूप में उभरकर आयी है। ज्ञानो समाज और अपने उपर होनेवाले अन्याय और अत्याचार को बर्दाश्त नहीं करती। ज्ञानो का चमार समाज में अलग अस्तित्त्व है क्योंकि वह अपने समाज के प्रति आस्था रखती है। वह अन्याय, अत्याचार सहनेवालों से नफरत करती है। वह कहती है, ' घोडेवाहा के चमार बहुत बेगौरत है, मुँह खोले बिना ही मार खा लेते है। ' (धरती धन अपना, पृ. 24) इसलिए अपने उपर होनेवाले अन्याय का जो विरोध नहीं करता उसे उनका बहुत गुस्सा आ जाता है। ज्ञानो निडर स्त्री है। वह अपने या अपने समाज पर होनेवाले अन्याय को सह नहीं पाती है। इसलिए तो वह इस तानाशाही समाज के विरोध में अपना आवाज उठाती है। वह निडर होकर जमींदारो के सामने भी बात करती है। अपनी गलती न होते हुए भी लोग चुपचाप अन्याय सह लेते हैं। इस बात से उसे ताज्जुब लगता है। पुरूष होकर भी अन्याय को सहना उसे कुत्ते के समान जीना लगता है। इसलिए वह इस समाज को जागृत करने का प्रयास करती है।

ज्ञानो अपने समाज के लोगों पर होनेवाले चौधरी के अत्याचार को सह नहीं पाती है। इसलिए तो वह निडर होकर अपनी तीखि आवाज में चौधरी को गालियाँ देती है। अपनी माँ के समझा देने के बावजूद भी उससे चुप रहा नहीं जाता। वह चॉधरी को गालियाँ देती ही रहती है। ज्ञानो अपने लोगों पर बहुत गुस्सा हो जाति है। क्योंकि वे चौधरी की हाँ में हाँ मिलाते रहते हैं और उनकी हर बात पर अपना सिर हिलाते है। ज्ञानो इन लोगों को घृणा से देखती है। उसे लगता है कि वह बस निडर होकर चौधरी को इतना बता दे कि ये जो कर रहे हैं नाजायाज है। वे जो मारपीट कर रहे हैं गलत है। उनके साथ हाथा - पायी करना तो दूर की बात है। ज्ञानो यह सोचकर भी परेशान हो जाति है कि, ' अगर बाहर का आदमी इस स्थिति को देखेगा तो क्या सोचेगा कि घोडेवाहा के चमार बहुत ही बेगैरत है। अपनी बात स्पष्ट न करते हुए ही मार खा लेते हैं। ' (पृ. 34)

तात्पर्य ज्ञानो ऐसा पात्र है जो इस रूढीबध्द सामाजिक परंपरा के विरोध में अपना आवाज बुलंद करना चाहती है। वह इस सामंतवादी लोगों के बीच निर्भिक होकर जीना चाहती है।

उपन्यासकार जगदीशचंन्द्र ने ज्ञानों को काली की साहसी प्रेमिका के रूप में चित्रित किया है। काली शहर से गाँव आ जाता है और ज्ञानो जब उसके सामने आ जाति है तो उसे छः साल पहले की एक बेबाक, झगडालु और खुले बालोंवाली लडकी उसके सामने घूम जाती है जो सारा दिन गलियों मे घूमती - फिरती थी। असके यौवन और सुडौल शरीर को निहारते हुए उसे बहुत ही बडी नजर आती है। (पृ. 30) जब से काली गाँव में अपने चाची के पास आया है तब से ज्ञानो का भी काली के घर आना - जाना बढ जाता है। तात्पर्य वह काली से प्रेम करती है। प्रेम अगर प्रेम का आधार बन जाए तो वह दुनिया बदल सकता है। नाकमयाब काम को कामयाब बना सकता है। वह अपनी मंजिल सहजता से पार कर सकता है। काली ज्ञानो के कारण ही फिर से शहर जाने की बात टालता है और गाँव में ही रहने की बात करता है। अपना मकान भी पक्का बनाने की बात अपने चाची से कहता है। ज्ञानो गाँव के लोगों की मानसिकता पहचानती है। उसने उन्हें करीब से देखा है। वह कहती भी है कि, ' अगर आदमी गाँववालों की मर्जी पर चलने लगा तो उसे एक दिन गाँव छोडना पडेगा या तो किसी कुएँ में छलाँग मारनी पडेगी।' (पृ. 57) ज्ञानो की इन्हीं बातों से काली प्रभावित होता है और वह अपनी मानसिकता बदल लेता है। सारतः ज्ञानो का चरित्र एक आदर्श नायिका एवं साहसी प्रेयसी के रूप में उभरकर आया है।

ज्ञानो को किसी के आगे झुकना पसंद नहीं है। नंदसिंह और चौधरी मुंशी के बीच जब झगडा हो जाता है तब काली नंदसिंह का पक्ष लेता है और उसकी चौधरी मुंशी से हाथापायी हो जाती है। इसी कारण काली को चौधरी हरनामसिंह की डाट खानी पडती है। इससे परेशान होकर वह गाँव छोडने का फैसला करता है। यह बात ज्ञानो को मालूम होती है तो उसे काली का चौधरी से घबराना अच्छा नहीं लगता है। वह चिढकर काली से कहती भी है कि, ' मैं तो समझती थी कि तू जिगरवाला आदमी है। तू आसानी से बदलनेवाला नहीं है। तेरे से गली के कुत्ते अच्छे है जो मारने से आगे से घूरते तो है।' (पृ. 209) तात्पर्य ज्ञानो को काली का चौधरी के आगे झुकना अच्छा नहीं लगता है। गाँव में जब बायकाट सुरू होता है उस समय भी उसने बुटासिंह और मुंशी को टोकरे से मारा था। सारतः ज्ञानो का ऐसा चरित्र है जो अपने उपर होनेवाले अन्याय को वह बिल्कुल सह नहीं पाती है।

ज्ञानो सच्ची प्रेमिका के रूप में उभरकर आयी है। जब वह अपना सबकुछ काली को देती है तो कुछ दिन वह उससे मिलती नहीं है। वह शर्म महसूस करती है। लेकिन कुछ दिनों बाद वह खुद फिर काली के पास चली जाती है। उसका फिर से काली के पास चले जान ही उसके सच्चे प्रेम को प्रस्तुत करता है। उसके बार - बार ठुकरा देने के बावजूद भी वह उसीकी ओर चली जाती है। गाँव के लोग उन्हे एक साथ देखकर जब अलग - अलग प्रश्न करते है। ज्ञानो को बहन कहने की बात वह काली को कहते है। लेकिन वह कुछ कहता नहीं है। जब ज्ञानो से पुछा जाता है तब वह भी निडरता से कहती है, ' अगर काली अपनी छाती पर हाथ रखकर कह दे कि वह मुझे अपनी बहन समझता है तो मै मान लूँगी की वह मेरा भाई है। (पृ. 276) तात्पर्य वह गलत बात कबूल नहीं करती है। वह एक विद्रोहिणी के रूप में निडरता से गाँववालों के सामने बात करती है।

उपन्यास में ज्ञानो का चरित्र आदर्श नारी, तो कही बहन, पत्नी, आदर्श प्रेमिका के रूप में उभरकर आया है। ज्ञानों को अपने ही परिवार व्दारा जब जहर की गोली दी जाती है तब ज्ञानो और उसके प्रेम का अंत हो जाता है नारी अपने कर्तव्य से भागती नहीं दिखाई पडती। गुप्त ने नारी की इस स्थिति को निम्र रूप में व्यक्त किया है - ' अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी। आँचल में है दूध और आँखो में पानी।'

संक्षेप में कह सकते हैं कि ज्ञानो का चरित्र एक निडर स्त्री, साहसी प्रेमिका, आदर्श नायिका, शोषिता, अन्याय का मुकाबला करनेवाली, अत्याचार का विरोध, विद्रोहिणी तथा अपने समाज के प्रति अस्था रखने वाली के रूप में उभरकर आया है।

संदर्भ संकेत :

पुरूषप्रधान संस्कृतीची गुलाम : स्त्री, कद्राळे नितीन, किर्ती प्रकाशन, औरंगाबाद
समकालीन हिन्दी नाटकों में नारीके विविध रूप, डॉ. आसाराम बेवले, समता प्रकाशन कानपूर
धरती धन न अपना, जगदीशचंन्द्र
साठोत्तरी उपन्यास, डॉ. पारूकांत देसाई, चिंतन प्रकाशन कानपूर